बी० ए० भाग - II
हिन्दी - II Paper

प्रश्न- 'हमारे पूर्वज' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'हमारे पूर्वज' कविता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की चर्चित कविताओं में से एक है। गुप्त जी का अतीत के प्रति विशेष अनुराग दिखाई देता है। यही कारण है कि इन्होंने इस कविता में अपने पूर्वजों की कीर्ति, बलिदान तथा उनके द्वारा प्रदत्त शान्ति प्राप्यपरक उपदेश, उच्चतम कर्तव्यनिष्ठा एवं धर्मपरायणता के प्रति अपना आदर एवं परितोष व्यक्त किया है। वास्तव में हमारे पूर्वज इतने महान थे कि —

" उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता पाप था,
अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे निवारक शोक के,
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के॥

सत्य तो यह है कि वे लोग सदैव अनुकरणीय आचरण एवं व्यवहार करते थे। हिंसा एवं पाप को अपने मन, मस्तिष्क एवं विचार में रंचमात्र भी आने नहीं देते थे। इतना ही नहीं उनके दर्शन मात्र से ही हृदय में विराजमान क्लेश एवं विकार दूर हो जाते थे तथा उनके धर्म के आचरण से आज भी हम सब गौरवान्वित होते हैं। यह रचना ऐसे अनुशासन में बाँधता है, जो हमें सही-मायने में इंसान होने की प्रेरणा प्रदान करता है।

हमारे पूर्वजों का जीवन संतोष एवं शान्ति से परिपूर्ण था तथा वे भ्रम एवं वितृष्णा के प्रति सदैव सजग रहते थे। यहाँ रहते हुए वे अपने आदर्श कर्मों

के कारण स्वर्ग के सुख को प्राप्त करते थे। उनकी स्थिति सदैव एक समान थी, न ही खुशी में अत्यधिक प्रसन्न होते थे और न ही दुःख में विचलित होते थे। उनके अन्तःकरण की पवित्र रूपी सुगन्ध से इन्द्रिय रूपी और हमेशा सद्भाव रूपी जलाशय में नित्य प्रसन्न रहते थे, खिले रहते थे। उनकी स्थिति यह थी कि वे ईश्वर एवं प्रकृति के प्रति आस्थावान थे –

"वे ईश-नियमों का कभी अवहेलना करते न थे,
सन्मार्ग पर चलते हुए वे विघ्न से डरते न थे।
अपने लिए वे दूसरों का हित कभी करते न थे,
चिन्ता प्रपूर्ण अशान्तिपूर्वक वे कभी मरते न थे।।

ईश्वर की परम सत्ता को स्वीकार करना हमारे पूर्वज की अपनी एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। इतना ही एक दूसरी बात है कि वे अपने स्वार्थ अथवा आत्महित के लिए वे अन्य को परेशान नहीं करते थे, ठगते नहीं थे।

वे लोग मोह-माया के बन्धन से मुक्त होकर स्वतन्त्र एवं स्वच्छन्द विचरण करते थे। उनके जीवन में सम्पूर्ण सुख एवं शान्ति बनी हुई थी। मनसा, वाचा, कर्मणा वे सदा ईश्वर की भक्ति में संलग्न रहते थे। उनके यश रूपी वस्तु की अपरिमित सीमा को पैमाना में बाँधना कठिन था। वे लोग दुनिया के अन्यान्य देशों में भी अपने धवल यश का प्रचार प्रसार किया। वे जहाँ भी

जीते थे उनके यश एवं ज्ञान के कारण अज्ञानता रूपी अन्धकार स्वयं समाप्त हो जाता था। विश्व में उन्हीं के द्वारा आस्तेय, प्रेम, मानवता, असौहार्द्रता, विश्व-बन्धुत्व इत्यादि का संदेश दिया गया; जिसके समक्ष आज सम्पूर्ण भुवन नतमस्तक है और भारत विश्वगुरु बना हुआ है।

किसी विषय की यदि उन्होंने विचार-विमर्श या चिन्तन अथवा चर्चा शुरू कर दिया तो ऐसा लगता था जैसे प्रकृति ने स्वयं उनकी सहायता कर साहित्य की रचना कर दी। समय उनके अनुकूल रहा हो या प्रतिकूल लेकिन उनके द्वारा अपने अटल सिद्धान्तों के कारण प्रतिकूलता भी अनुकूलता में बदल गई। ओर पूर्वज पृथ्वी के सतह में सदा पुण्य-परोपकार का बीज-वपन करते थे। दूसरे के दुःख से द्रवीभूत हो उठते थे। उनके सात्विक गुण का प्रकाश अन्धकार को सदैव भगाता था। वे सही मायने में असली अर्थ पुरुष थे जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीते थे जिन्हें कभी स्वार्थ कभी डिगा नहीं पाया। उनका जीवन ही दूसरे लोगों के उपकार के लिए था।

कबीर ने ठीक ही कहा है—

वृक्ष न कबहुँ फल भखै,
नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने,
साधुन धरा शरीर॥

इसप्रकार गुप्त जी का यह प्रेम उस सन्दर्भ की देन है जब हमारे अतीत को

कल्पना प्रसूत और यथार्थहीन मानकर विदेशियों द्वारा आलोचना हो रही थी। भारती गौरव के संरक्षण में यह कविता गुप्तजी की "भारत-भारती" में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कविता की भाषा सहज, संस्कृतनिष्ठ और उद्बोध शैली से युक्त है। यह कविता हमारे मर्म को न सिर्फ सांद्रीकरण है अपितु सोचने के लिए विवश भी करती है।

[signature] 25/9/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया